फाइलों का समभाव से निपटारा करना

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

फाइल का निपटारा करने का अर्थ है कि हम पूर्वजन्म में जो कर्म बीज बपन किये हैं उसका इस जन्म में परिणाम मिलता है। फल जब पकता है तो उसका स्वाद मिलता है। कार्य का परिणाम वर्तमान जन्म में भोगना पड़ता है। यही सही दृष्टि और सही सोच है। पूर्वजन्म में बोये गये बीज के आधार पर इस जन्म में उसको भुगतना पड़ता है। पूर्वजन्म का पुरुषार्थ भाग्य के रूप में इस जन्म में फलित होता है। पुण्य के उदय होने पर अच्छा परिणाम मिलता है और पाप के उदय होने पर बुरा परिणाम मिलता है। जैसे कर्मों का उदय होता है, वैसे परिणाम मिलते हैं। भूत बीत गया, उसी के आधार पर वर्तमान बना है। वर्तमान के आधार पर भविष्य की रचना हो। यदि हमने पूर्वजन्म में किसी से पैसा उधार लिया और उसका चुकता नहीं किया तो वह मुझसे इस जन्म में किसी न किसी रूप में अवश्य वसूल कर लेगा। यह कर्म सिद्धांत है।

पूत्र–पूत्री, शत्रु, हितेषी, दुर्घटना या किसी अन्य रूप में संबंधित होकर भुगतान करवा लेता है। परिणाम चाहे रोकर भुगते या हंसकर भुगतना अवश्य पड़ेगा। जीवन की फाइलें समय–समय पर खुलती रहती है। जैसी फाइल खुलती है उसका निपटारा ही वैसे ही करना होता है। यदि लेने वाले फाइल खुलेगी तो वह लेगा अवश्य। यदि देने वाली फाइल खुलेगी तो वह अवश्य देगा। इस बात को कोई जानता नहीं। यह अदृश्य है। जीवन की कौनसी फाइल कब खुलेगी यह अज्ञात रहता है। फाइल खुल जाने पर उसका निपटारा अवश्य करना पड़ता है। यह शाश्वत सत्य है। जब भुगतना है तो सावधानी पूर्वक भुगतना चाहिए। भुगतान कोई नई चीज नहीं है। यह किये हुए कर्मों का ही परिणाम है।

सम्पूर्ण जीवन एक फिल्म की तरह चल रहा है। फिल्म की घटनाओं की तरह जीवन में उतार चढ़ाव आते रहते हैं। ज्ञाता द्रष्टा भाव से उसे देखना चाहिए। जीवन के सुख–दुःख को

समभाव से सहन करना चाहिए। हमारे सम्पर्क में या मुझसे संबंधित जो कोई है, उससे मैंने पूर्वजन्म में या तो कुछ दिया है या लिया है। जैसा लेन–देन है कुदरत के कानून के हिसाब से उसका निपटारा भी वैसे ही होगा। मानव का यह स्वभाव है कि दूसरों के छोटे से अवगुणों को देख लेता है किन्तु पहाड़ के समान बड़े अपने अवगुणों को नहीं देख पाता। इसका मुख्य कारण यह है कि मानव दूसरों के अवगुणों को देखने का आदि हो गया है। आत्म सुधार के लिए स्वयं के दोषों को देखना बहुत आवश्यक है। जब तक मनुष्य अपने दोषों को सुधारेगा नहीं तब तक उसका अन्तःकरण शुद्ध नहीं हो सकता। सिद्ध बुद्ध मुक्त होने के लिए स्वयं के दोषों को देखना आवश्यक है।

मनुष्य को दूसरों के दोषों को देखकर अपने भावों को नहीं बिगाड़ना चाहिए। भाव बिगाड़ने से बन्धन होता है। भाव रूपी बीज के बपन होने से नकारात्मकता आती है। इस सन्दर्भ को दादा भगवान जो आधुनिक युग के एक महान विचारक हैं, जिन्होंने अक्रम विज्ञान का महान अवदान समाज को दिया है। दादा भगवान स्वयं कहा करते थे कि यह नाम व्यक्ति का नहीं है बल्कि अन्तर विराजमान शुद्ध आत्मा ही दादा भगवान है। दादा भगवान को यह ज्ञान हो गया था कि शरीर भिन्न है और आत्मा भिन्न है। जो व्यक्ति शरीर और आत्मा को भिन्न–भिन्न देखता है वह आत्मदर्शी होता है। आत्मा केवल ज्ञान स्वरूप है। आत्मा का स्वरूप सच्चिदानन्द है। जब कर्म रज आत्मा के साथ जुड़ जाते हैं तो आत्मा का स्वाभाविक गुण प्रकट नहीं हो पाता। इसे दूर करने के लिए आत्मा के स्वाभाविक स्वरूप का ज्ञान आवश्यक है।

संत कबीर बहुत बड़े ज्ञानी थे। उन्होंने लिखा है कि बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय। जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय। अर्थात कबीरदासजी कहते हैं कि जब मैं दूसरे के दोषों को घर से निकला तो मैंने यही पाया कि इस संसार में मुझसे बुरा कोई नहीं है। मनुष्य जिस चश्में से देखता है, चश्में के रंग के अनुकूल ही दुनिया उसे दिखाई देती है। वस्तु का पारमार्थिक स्वरूप कभी–कभी प्रत्यक्ष से भिन्न होता हे। इसलिए ज्ञान रूपी नेत्रों से देखना बहुत आवश्यक है। मनुष्य को अपने अन्दर विद्यमान शुद्ध आत्मा का दर्शन करना चाहिए। दोष होना मनुष्य का स्वाभाविक गुण है। यदि मनुष्य में दोष न रहे तो वह भगवान बन जाये। इसलिए मानव को अपने दोषों का ज्ञान होना चाहिए और उसे दूर करने का प्रयास

करना चाहिए। यह प्रयास कई प्रकार से किया जा सकता है। उसमें सेवा धर्म भी एक प्रमुख धर्म है।

सेवा एक ऐसा गुण है जिसके द्वारा अहंकार नष्ट हो जाता है। सेवा तीन प्रकार से की जा सकती है– तन, मन और धन से। तन की सेवा शारीरिक परिश्रम के द्वारा की जा सकती है। मन की सेवा समाज को चिन्तन, मनन, नये विचार और मार्ग दर्शन के द्वारा की जा सकती है। धन से समाज के उन वर्गों के उत्थान के लिए जो धन से हीन है या जिनके पास पढ़ने–लिखने के साधन नहीं है उनको आर्थिक सहायता देकर सेवा की जा सकती है। सेवाधर्म बहुत की गूढ़ है। अतः सेवा करने वाले व्यक्ति को नम्रता पूर्वक चाहे व जिस क्षेत्र में हो सेवा का योगदान देना चाहिए।